ISBN: 978-81-936681-7-7

USE OF TECHNICAL TERMINOLOGY IN HIGHER EDUCATION

AN EDITED BOOK

AN OUTCOME OF THE NATIONAL WORKSHOP
SPONSORED BY CSTT, MHRD, GOVERNMENT OF INDIA

EDITOR : DR. MANASHI GOGOI BORGOHAIN

Scanned with CamScanner

USE OF TECHNICAL TERMINOLOGY IN HIGHER EDUCATION: A volume on relevant issues of CSTT and Technical Terminology, edited by Dr. Manashi Gogoi Borgohain, Head, Department of Education, Nandalal Borgohain City College, Dibrugarh, Assam and published by Nandalal Borgohain City College Publication, Dibrugarh, Assam, India on behalf of IQAC, Nandalal Borgohain City College, Dibrugarh.

Publisher :
Nandalal Borgohain City College Publication, Dibrugarh, Assam, India

Sole Distributor:
Banphul Press, Dibrugarh, Assam

First Published:
December, 2018

Copyright:
Nandalal Borgohain City College Publication

ISBN: 978-81-936681-7-7

Cover Design & Plan :
Dr. Manashi Gogoi Borgohain

Price: **Rs.210/-**

Printed at:
Banphul Press, Dibrugarh, Assam
E-mail-Banphulpress@gmail.com

The views expressed here are the views of the Authors and do not reflect the views of the Editor or Publisher.

Scanned with CamScanner

❖ तकनीकी शब्दावली: अवधारणा एवं महत्व 37
✍ डॉ. अनुशब्द एव डॉ. चारु गोयल

❖ Translation of Technical Terminology in Political Science to Assamese : Issues and Challenges 51
✍ **Dr. Dibyajyoti Dutta**

❖ Role of Glossary in Social Science Teaching in Vernacular Medium 58
✍ **Dr. Dwijendra Nath Deka**

❖ Technological Revolution in Everyday Life 63
✍ **Dr. Kripa Prasad Upadhaya**

❖ Some selected Terminologies used in the Psychology and Education. 70
✍ **Dr. Sudhir Kumar Singh**

CS Scanned with CamScanner

ISBN:978-81-936681-7-7

तकनीकी शब्दावली: अवधारणा एवं महत्व

डॉ. अनुशब्द एव डॉ. चारु गोयल

डॉ. अनुशब्द, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर , असम
एवं
डॉ चारु गोयल, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

इतिहास गवाह है कि भारत में एक लंबे समय तक राजभाषा के रूप में पहले फारसी और फिर अंग्रेजी का स्थान रहा। उससे भी पहले वैदिक काल कि बात करें तो संस्कृत राजकाज की भाषा रही। इस दृष्टि से यदि हम देखें तो हिंदी हमें राजभाषा के रूप में चौथे पायदान पर मिली। 14 सितंबर 1949 को जब हिंदी को संवैधानिक तौर पर राजभाषा का दर्जा मिला तो हमारे सामने एक व्यावहारिक समस्या यह थी कि राजकाज का जो काम वर्षों से दूसरी-दूसरी भाषाओं में होता चला आ रहा था उसे हिंदी में कैसे किया जाए क्योंकि हमारे पास विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और खबरपालिका से संबद्ध नहीं थे। ऐसी स्थिति में संविधान में यह प्रावधान किया गया कि 26 जनवरी 1950 से लेकर अगले पंद्रह वर्षों तक यानी 1965 तक हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी राजकाज का

CS Scanned with CamScanner